1 मंज़िल पर बढ़नेवालों को

पाठ-योजना

कविता का नाम	**मज़िल पर बढ़नेवालों को**
कालांश संख्या	4 से 6
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
कविता का उद्देश्य	• जीवन में आने वाली नई चुनौतियों को स्वीकार कर उनका सामना करने की प्रेरणा देना। • दुखों और बाधाओं से वीरतापूर्वक जूझने की सीख देना • कविता का भावानुसार और लययुक्त वाचन सिखाना • वर्ण-विच्छेद, लिंग और काल का परिचय देकर अभ्यास कराना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना
कविता में आने वाले विषय	वर्ण-विच्छेद, विलोम शब्द, अनेकार्थी, लिंग, काल, कविताओं का संकलन, अनुच्छेद-लेखन, चार्ट-निर्माण, वाद-विवाद
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	मंज़िल/मञ्ज़िल, भयंकर/भयडकर, असंभव/असम्भव, इंद्रिय/इन्द्रिय, संतोष/सम्तोष, अंतर/अन्तर
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• कविता के शीर्षक और चित्र पर बच्चों से चर्चा करने को कहें— चित्र में क्या दिख रहा है? • बच्चों से पूछें— स्वतंत्रता सेनानियों के नाम, उन्हें कौन-कौन प्रेरणा देता है? क्या वे कभी किसी को प्रेरित करते हैं— कब? • Smart Board पर e-book द्वारा कविता का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर कविता का वाचन करवाएँ। • बीच-बीच में कविता से संबंधित प्रश्न पूछकर एकाग्रता को बनाए रखें। • कविता में आए कठिन शब्दों को बोर्ड पर लिख लें। उनका शुद्ध उच्चारण, अर्थ तथा प्रयोग बताएँ। • कविता का सरलार्थ और मूल भाव बताएँ। • कविता की प्रासंगिकता पर कक्षा में चर्चा करें।
मध्य कौशल— लेखन, वाचन	• माइंड मैप द्वारा कविता की पुनरावृत्ति करवाएँ। • 'पढ़िए' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए शब्दों का उच्चारण करवाएँ। श्रुतलेख भी करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे के लिखे गए शब्दों की वर्तनी जाँचें। • 'बताइए' और 'सोचिए' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें। बच्चे मौखिक रूप से उत्तर दें। • 'लिखिए' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न 1 और व्याकरण संबोध में दिए प्रश्नों को पुस्तक में ही हल करवाएँ। प्रश्न 2 और 3 पर कक्षा में चर्चा करें और कॉपी में हल लिखवाएँ। • विषय संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत छात्रों के समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह अपनी इच्छानुसार गतिविधि का चुनाव करे और कक्षा में प्रस्तुत करे। • 'क्या होता यदि' शीर्षक के अंतर्गत दी गई स्थिति पर सामूहिक चर्चा करवाएँ और मुख्य बिंदुओं को कॉपी में नोट करने को कहें।

Scanned with OKEN Scanner

अभ्यास

पढ़िए

1. मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)

दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. बताइए

क. किसको शूलों की परवाह नहीं होती?

उ दृढ़ संकल्पी, मेहनती और सच्चे कर्मयोगी को शूलों की परवाह नहीं होती।

ख. नभ किनके चरणों में झुकता है?

उ जो लोग अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्पित होते हैं उनके सामने आकाश भी झुक जाता है।

ग. तूफ़ानों से टकराने वाले क्या कर सकते हैं?

उ तूफ़ानों से टकराने वाले हर चुनौती का सामना कर सकते हैं और अपने देश और लोगों की रक्षा के लिए हर मुश्किल को पार करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

लिखिए

1. काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर छाँटिए और लिखिए—

क. संतोष की तुलना किससे की गई है? i. महाधन से ✓

ख. किसके लिए दूसरों की लाखों की संपत्ति को तिनके के समान बताया गया है? i. संतोष रखने वालों के ✓

ग. मंज़िल पर बढ़नेवालों को किसकी परवाह नहीं होती? ii. शूलों की ✓

घ. 'सबका हित' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उ. 'सबका हित' से कवि का अभिप्राय है सबका भला करना। जिन लोगों का परम लक्ष्य सबका भला करना है और जिनके लिए संतोष सबसे बड़ा धन है।

ङ. 'प्रेम के रत्नाकर' की क्या विशेषता है?

उ. 'प्रेम के रत्नाकर' अर्थात जो लोग दया और स्नेह के भंडार हैं, उनके मन की गहराई को कोई नहीं माप सकता। सच्चे परोपकारी और संतोषी व्यक्ति दूसरों की मदद करने में ही खुश होते हैं और उनके लिए भौतिक संपत्ति का कोई महत्व नहीं होता।

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए—

क. कवि किन रोडों को ठोकर मारने की बात कह रहे हैं?

उ. कवि का 'रोड़ों को ठोकर मारने' से तात्पर्य उन सभी बाधाओं और कठिनाइयों से है जो किसी व्यक्ति के लक्ष्य की ओर बढ़ने के रास्ते में आती हैं। ये बाधाएँ जीवन की विभिन्न चुनौतियाँ, समस्याएँ, और विपत्तियाँ हो सकती हैं जिन्हें पार करके ही व्यक्ति अपनी मंज़िल तक पहुँच सकता है।

ख. कवि ने आँसू की तुलना किससे की है?

उ. कवि ने आँसू की तुलना सच्चे मोती से की है।

ग. 'विपदा की नैया खेना'— का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. 'विपदा की नैया' का मतलब है कठिनाइयों और समस्याओं से भरी हुई नाव। 'विपदा की नैया खेना' का आशय यह है कि कठिनाइयों और विपत्तियों का सामना करने में कुशल लोग ही विपदा की नैया मतलब नाव चला सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

3. **विस्तार से उत्तर लिखिए—**

क. कवि ने 'गीता' का उल्लेख क्यों किया है? उससे क्या सीख मिलती है?

उ. कविता में कवि ने 'गीता' का उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि भगवद गीता एक महत्वपूर्ण धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ है जो कर्मयोग और निस्वार्थ कर्म का संदेश देता है। गीता से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी फल की चिंता किए करना चाहिए। कवि इस संदर्भ में यह बताना चाहते हैं कि जो लोग गीता के इस आदर्श को अपने जीवन में अपनाते हैं, वे किसी भी कठिनाई से नहीं डरते और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं।

ख. जीवन में 'देना' और 'लेना' से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उ. जीवन में 'देना' और 'लेना' से कवि का आशय निस्वार्थता और स्वार्थ से है। 'देना' का मतलब है दूसरों की मदद करना, उनके लिए कुछ करना बिना किसी स्वार्थ के। वहीं 'लेना' का मतलब है केवल अपने लिए सोचना और दूसरों से कुछ प्राप्त करने की इच्छा रखना। यह स्वार्थ का प्रतीक है। कवि यह कहना चाहते हैं कि सच्चे संघर्षकर्ता और महान लोग जीवन में केवल 'देना' जानते हैं। वे निस्वार्थ भाव से समाज का भला करते हैं। इस प्रकार, 'देना' और 'लेना' के माध्यम से कवि निस्वार्थता और स्वार्थ के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हैं और निस्वार्थ भाव से जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

ग. चतुर खिवैया की क्या विशेषताएँ हैं?

उ. चतुर खिवैया तूफ़ानों से टकराने का साहस रखते हैं और किसी भी कठिनाई से नहीं डरते। वे अपनी नाव (अर्थात देश) को कुशलता से चलाते हैं और विपत्तियों का सामना करने में निपुण होते हैं। वे अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्पित होते हैं और किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानते। चतुर खिवैया अपने नेतृत्व में दूसरों को भी प्रेरित करते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। वे धैर्यपूर्वक हर चुनौती का सामना करते हैं और अपनी नाव को सुरक्षित रखते हैं और अपने कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित होते हैं तथा अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।

इन विशेषताओं के कारण 'चतुर खिवैया' हर तूफ़ान का सामना कर सकते हैं और अपनी नाव को डूबने नहीं देते।

घ. कविता का प्रतिपाद्य/केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ. इस कविता का केंद्रीय भाव यह है कि जो लोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्पित होते हैं, वे किसी भी कठिनाई या बाधा से नहीं डरते। वे हर चुनौती का सामना साहस, धैर्य और निस्वार्थ भाव के साथ करते हैं। उनके लिए जीवन में 'देना' ही महत्वपूर्ण होता है और वे दूसरों की मदद करने में ही अपनी खुशी पाते हैं।/कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि सच्चे संघर्षकर्ता और कर्मयोगी हर परिस्थिति में अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं/। उनके लिए असंभव कुछ भी नहीं होता और वे अपने दृढ़ निश्चय और मेहनत से हर मुश्किल को पार कर सकते हैं।

इस प्रकार, कविता हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपने जीवन में निस्वार्थ भाव से कर्म करें और हर चुनौती का सामना साहस और धैर्य के साथ करें।

ङ. 'सुमनों की राह' स्वतंत्रता के दीवानों के लिए नहीं होती? अपने विचार लिखिए।

उ. 'सुमनों की राह' का मतलब है आसान और सुखद मार्ग, जो फूलों से सजी हो। स्वतंत्रता के दीवानों के लिए यह राह नहीं होती क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग कठिनाइयों और संघर्षों से भरा होता है। स्वतंत्रता सेनानियों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक कठिनाइयों और विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपने जीवन में अनेक बलिदान देने पड़ते हैं और कई बार अपनी जान की बाजी भी लगानी पड़ती है। इसलिए, स्वतंत्रता के दीवाने फूलों की राह पर नहीं चलते, बल्कि काँटों और कठिनाइयों से भरे मार्ग पर चलते हैं। वे हर चुनौती का सामना साहस और धैर्य के साथ करते हैं। मेरे विचार में, यह पंक्ति स्वतंत्रता सेनानियों के साहस, धैर्य और समर्पण को दर्शाती है और हमें यह सिखाती है कि किसी भी महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिनाइयों का सामना करना आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner

2 हंस और कौआ

पाठ-योजना

पाठ का नाम	**हंस और कौआ**
कालांश संख्या	4 से 8
शिक्षण प्रक्रिया	Student Led
पाठ का उद्देश्य	• अपनी क्षमताओं के अनुसार कार्य करने की सीख देना • दया और विनम्रता जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करना • शक्ति और विनम्रता का संबंध बताना • अहंकार से बचने की सीख देना • पाठ का भावानुसार वाचन सिखाना • कठिन शब्दों के अर्थ और विशिष्ट प्रयोग बताना • संज्ञा के भेद और सदा स्त्रीलिंग-सदा पुल्लिंग का परिचय देकर अभ्यास कराना • विभिन्न गतिविधियों द्वारा सृजनात्मक क्षमता का विकास करना • अपठित बोध का अभ्यास करवाना
पाठ में आने वाले विषय	अनुकरणात्मक शब्द, विलोम शब्द, पर्यायवाची, संज्ञा के भेद, सदा स्त्रीलिंग-सदा पुल्लिंग, संवाद-लेखन, कहानी सुनाना, अभिनय, कहानी-लेखन, अपठित बोध
शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक, आई-बुक एनिमेशन, वेब सपोर्ट, टेस्ट जेनरेटर
मानक/अमानक शब्द	पत्ते/पत्ते, जाएँगे/जायेंगे, आए/आये
आरंभ— चर्चा एवं समूह वाचन, कौशल— पठन, वाचन-श्रवण	• पाठ के शीर्षक और चित्र पर कक्षा में चर्चा करवाएँ—पाठ के शीर्षक से इसकी विषयवस्तु के बारे में क्या पता चलता है? हंस और कौए के बारे में आप क्या-क्या जानते हैं? • हंस और कौए से संबंधित कोई पंचतंत्र की कहानी सुनें-सुनाएँ। • पूछें—एक-दूसरे से प्रतियोगिता किस आधार पर करनी चाहिए? प्रतियोगिता कब अच्छी और कब बुरी होती है आदि। • कहानी का सार बताएँ। • Smart board पर पाठ का एनिमेशन दिखाएँ और वाचन सुनवाएँ। • कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर पाठ का वाचन करवाएँ। • संवाद बोलते समय छात्र भावों का ध्यान रखें। • वाचन के समय कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों को Board पर लिखें। उनका शुद्ध उच्चारण, अर्थ और प्रयोग बताएँ। • पाठ की प्रासंगिकता के बारे में बच्चों को चर्चा करने दें। उनके विचार जानें और अपने भी विचार रखें।

Scanned with OKEN Scanner

अभ्यास

पढ़िए

1. मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)

दिए गए शब्दों की शुद्ध वर्तनी कक्षा में बोर्ड पर लिखवाएँ या कॉपी में लिखने को कहें। शब्दों का कक्षा में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

2. बताइए

क. कौआ कहाँ रहता था?

उ. कौआ सरोवर के किनारे एक बड़े बरगद के पेड़ पर रहता था।

ख. कौए को कितनी उड़ानें आती थीं?

उ. कौए को इक्यावन उड़ानें आती थीं।

ग. कौआ हंसों को क्यों पहचान नहीं सका?

उ. कौए ने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी हंस नहीं देखे थे इसलिए वह हंसों को पहचान नहीं पाया।

घ. पानी से निकालकर हंस ने कौए के साथ क्या किया?

उ. पानी से निकालकर हंस ने कौए को अपनी पीठ पर बैठा लिया। फिर उसे लेकर ऊपर आसमान की ओर उड़ चला।

3. सोचिए (मूल्यपरक प्रश्न)

✧ लोग 'शेखी बघारना' अथवा 'शो ऑफ़' करना क्यों ज़रूरी समझते हैं? आपके विचार में यह कहाँ तक उचित है?

उ. लोग 'शेखी बघारना' अथवा 'शो ऑफ़' करना इसलिए ज़रूरी समझते हैं क्योंकि वे दूसरों के सामने अपने ज्ञान, धन अथवा रुतबे का प्रदर्शन कर अपने को श्रेष्ठ दिखाना चाहते हैं, वे अपने को दूसरों से अलग और सबसे बड़ा सिद्ध करने के लिए शेखी बघारते हैं। ऐसा करने के पीछे उनका गर्व और अंहकार होता है। परंतु मेरे विचार से 'शो ऑफ़' करने से कुछ हासिल नहीं होता। यदि आपने कोई बड़ी उपलब्धि हासिल की है तो लोग खुद ही सब कुछ जान जाते हैं। बिन कहे ही आप प्रसिद्ध हो जाते हैं। जैसे सूरज या चाँद किसी की प्रशंसा के मोहताज़ नहीं हैं। वे क्या हैं— उन्हें किसी को अपनी विशेषताएँ बताने की आवश्यकता नहीं है।

कभी-कभी शेखी बघारना अज्ञानता और मूर्खता का पर्याय हो जाता है। वह उपहास का प्रतीक भी बनता है जैसा कि इस पाठ में कौए के साथ हुआ।

लिखिए

1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

कौए ने ..... हँसते रहे।

क. कौए ने पहली उड़ान किस प्रकार भरी? — ii. ऊपर उड़कर ✓

ख. कौए ने कितनी उड़ान दिखाईं? — iv. इक्यावन ✓

ग. तीसरी उड़ान में कौए ने क्या किया? — i. पत्ते-पत्ते पर उड़कर बैठा ✓

घ. हंस मन ही मन क्यों हँसते रहे?

उ. हंस कौए की मूर्खता पर हँस रहे थे।

ङ. क्या सच में कौए को इक्यावन तरह से उड़ना आता था? इसका क्या अर्थ है?

उ. वास्तव में कौए को इक्यावन तरह से उड़ना नहीं आता था। हंसों के सामने अपनी अयोग्यता और मूर्खता छुपाने के लिए वह तो सिर्फ़ शेखी बघार रहा था।

2. सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए—

क. सवेरा होने पर कौए ने किन्हें देखा? — iii. हंसों को ✓

ख. हंस ने कौए को अपने साथ कितनी उड़ानें भरने को कहा? — ii. एक ✓

Scanned with OKEN Scanner

3. संक्षेप में उत्तर लिखिए—

क. कौए का रंग-रूप कैसा था?

उ. कौआ काजल की तरह काला, काना और लँगड़ा था।

ख. नौजवान हंस ने कौए से क्या कहा?

उ. नौजवान हंस कौए से बोला, "कौए भैया, अब तो हद हो गई। छोटा मुँह बड़ी बात हो जाएगी। आओ, हम कुछ दूर उड़ लें। लेकिन पहले हमें अपनी इक्यावन उड़ानें तो दिखा दो! फिर हम भी देखेंगे और हमें पता चलेगा कि कैसे कौआ, कौआ है और हंस, हंस है।"

ग. हंस ने कौए की जान क्यों बचाई?

उ. कौए को गिड़गिड़ाते देख हंस को उसपर दया आ गई। जब हंस ने देखा कि कौए को अपनी गलती का अहसास हो गया है तो उसने कौए की जान बचाई और वापस बरगद के पेड़ पर बैठा दिया।

4. विस्तार से उत्तर लिखिए—

क. "कौए की बराबरी कभी किसी ने की है!" कौऐ ने ऐसा क्यों कहा?

उ. कौवे का दृष्टिकोण बहुत ही संकुचित था। वह घमंडी भी था। वह काँव-काँव कर बोलता था। जब वह उड़ता, तो लगता था कि अब गिरा, तब गिरा। पर वह मानता था कि उसकी तरह न कोई उड़ सकता है और न ही बोल सकता है। उसके घमंड की कोई सीमा नहीं थी। उसका दिमाग सदैव ही सातवें आसमान पर रहता था। अहंकार से ग्रसित होकर ही कौए ने ऐसा कहा कि "कौए की बराबरी कभी किसी ने की है?"

ख. कौए ने अपनी इक्यावन उड़ानें किस तरह दिखाईं?

उ. कौआ एक मिनट के लिए ऊपर उड़ा और बोला, "यह हुई एक उड़ान।" फिर नीचे आया और बोला, "यह हुई दूसरी उड़ान।" फिर पत्ते-पत्ते पर उड़कर बैठा और बोला, "यह हुई तीसरी उड़ान।" बाद में एक पैर से दाहिनी तरफ़ उड़ा और बोला, "यह चौथी उड़ान।" फिर बाईं तरफ़ उड़ा और बोला, "यह पाँचवीं उड़ान।" कौआ अपनी ऐसी उड़ानें दिखाता गया। पाँच, सात, पंद्रह, बीस, पच्चीस, पचास और इक्यावन उड़ानें उसने दिखा दीं।

ग. हंस के साथ उड़ते समय कौआ पहले तो आगे था पर कुछ देर बाद पीछे रह गया। क्यों?

उ. कौए ने फटाफट पंख फड़फड़ाकर हंस के साथ उड़ना शुरू कर दिया पर हंस धीरे-धीरे पंख फड़फड़ाता हुआ कौवे के पीछे-पीछे उड़ने लगा। शुरू-शुरू में कौवा आगे था। जब तक उसके पंखों में शक्ति बाकी थी, तब तक वह आगे-आगे और हंस पीछे-पीछे उड़ता रहा। पर जल्दी ही वह थक गया और हंस से पिछड़ने लगा। उसमें उड़ने की ताकत नहीं रही जबकि हंस एक गति से बिना थके उड़ता रहा और कौए से आगे निकल गया।

घ. कौए को डूबता देख हंस का उसे बचाना कहाँ तक उचित था?

उ. कौए को डूबता देख हंस का उसे बचाना उचित था क्योंकि कौआ अपनी मूर्खता और अहंकार के कारण बड़बोलेपन का शिकार था। जबकि हंस क्षमता और योग्यता होते हुए भी विनम्र और विवेकवान था। उसमें अहंकार न था। उत्तम जन ही दया और क्षमा कर सकते हैं। कहा भी गया है—क्षमा शोभती इस भुजंग को जिसके पास गरल हो।

आशय स्पष्ट कीजिए—

क. उसके पंख अब पानी छूने लगे थे।

उ. इस पंक्ति का आशय यह कि अब कौए में उड़ने की शक्ति नहीं रह गई थी और वह पानी में अब डूबने ही वाला था।

ख. उस दिन से कौआ समझ गया कि उसकी बिसात कितनी है।

उ. इस पंक्ति का आशय यह कि अब उसका अहंकार चूर-चूर हो चुका था। उसे अपनी गलतियों और सीमाओं का अहसास हो गया था।

समझिए व्याकरण संबोध

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए—

पंख	—	...फड़फड़ाना...	होंठ	—	...थरथराना...	जीभ	—	...लपलपाना...
मुँह	—	...बुदबुदाना...	हाथ	—	...कँपकँपाना...	आँख	—	...मिचमिचाना...

Scanned with OKEN Scanner